हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार, 10 अगस्त, 2025

12 बहनों ने भाईयों की कलाई पर बांधी राखी, बाजारों में देर शाम तक रही चहल-पहल

12 कर्मचारियों की मांगों को अनदेखा कर रही सरकार

खबर संक्षेप

कक्षा 6 में प्रवेश के लिए आवेदन 13 तक

ओढां। पीएम-श्री जवाहर नवोदय विद्यालय ओढ़ां में सत्र 2026-2027 के लिए कक्षा 6 में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। प्रिंसिपल ललित कालड़ा ने बताया कि जो छात्र-छात्रा वर्तमान में कक्षा पांचवी में पढ़ रहे हैं तथा सिरसा जिले के मूल निवासी हैं वे 13 अगस्त तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

दो जेब कतरे पकड़े, 15 हजार की राशि बरामद

सिरसा। पुलिस ने नागरिक अस्पताल में दवा लेने गए एक व्यक्ति की जेब से बीस हजार रुपये चुराने वाले दो आरोपियों को आज शहर क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया है। शहर थाना प्रभारी चरणजीत सिंह ने शनिवार को बताया कि मनोहर लाल वर्मा की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ जेब तराशी का मामला दर्ज किया था।

एमपी रोही में विद्यार्थियों को दिया नशा विरोधी संदेश

फतेहाबाद। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के दिशा-निर्देशन में और एसआई सुंदर के कुशल नेतृत्व में नशा मुक्ति टीम ने आज गांव मोहम्मदपुर रोही के राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया। कार्यक्रम के दौरान उपरोक्त गांव के 10 पूर्व चिन्हित ड्रग पीड़ितों और गांव भूथन कलां के 7 पूर्व चिन्हित पीड़ितों की काउंसलिंग की गई। उन्हें आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक दवाएं उपलब्ध कराई गई तथा डोजियर फार्म भरकर संबंधित रिकॉर्ड अपडेट किया गया।

बहनों ने भाइयों को राखी बांध मनाया रक्षाबंधन

बसों ने लगाए 50 फेरे, फिर भी महिलाओं को उठानी पड़ी दिक्कत

195 बसों ने लगाए 250 फेरे, 45 हजार किलोमीटर का सफर किया तय, 2 लाख के राजस्व का नुकसान

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

रक्षाबंधन पर रोडवेज बसों में महिलाओं के लिए फ्री यात्रा के दूसरे दिन शनिवार को भी बसों में मारामारी जैसे हालात रहे। फतेहाबाद के पुराने बस स्टैण्ड पर सुबह से ही महिलाओं की भारी भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी। फतेहाबाद से रतिया, सिरसा, हिसार, टोहाना, भूना, भिवानी व रोहतक जाने वाले रूटों पर सबसे अधिक भीड़ थी। रोडवेज व निजी बसों के लगातार चलने के बावजूद भी महिलाएं बसों का इंतजार करती देखी गई। भीड़ के चलते बसों में चढने के लिए महिलाओं को काफी मशक्कत करनी पड़ी। हालांकि शुक्रवार को रोडवेज की मिसमैनेजमेंट के बाद शनिवार को रोडवेज ने काफी सुधार किया। रोडवेज बसों के 50 फेरे डबल शिफ्ट में लगवाएं ताकि महिलाओं को परेशानी न हो। आज रोडवेज के सभी कर्मचारी ड्यूटी पर थे। राखी के मौके पर महिलाओं के लिए फ्री बस सेवा देने से फतेहाबाद रोडवेज का करीब 2 लाख रुपये का राजस्व प्रभावित हुआ है। बता दें कि हरियाणा सरकार द्वारा रक्षाबंधन को लेकर महिलाओं को उनके 15 साल के बच्चे के साथ बसों में फ्री यात्रा की घोषणा की हुई है। शुक्रवार दोपहर 12 बजे से शनिवार रात 12 बजे तक महिलाओं से रोडवेज बसों में कोई किराया नहीं लिया गया। पहले दिन महिलाओं को फ्री यात्रा को लेकर उनकी निजी बस परिचालकों से बहस भी हुई, दूसरे दिन निजी बसों में भी महिलाओं से किराया वसूला गया। शनिवार को शुक्रवार की बजाय बस अड्डों पर महिलाओं की भारी भीड़ देखी गई। शहर के पुराना बस स्टैंड पर अधिक भीड़ होने के चलते अव्यवस्था का माहौल रहा। यहां पर भारी संख्या में महिलाएं लोकल व बड़े रूटों पर जाने के लिए रूकी हुई थी। लोकल रूटों पर हालांकि महिलाओं के लिए लगातार बसें आ रही थी मगर बड़े रूटों के लिए उनको घंटों इंतजार करना पड़ रहा था। बड़े रूटों पर बसों में जगह कम पडने से महिलाओं को लटककर या खड़े होकर सफर करना पड़ा। भीड़ के मद्देनजर रोडवेज द्वारा अतिरिक्त बसों का प्रबंध करने से महिलाओं को ज्यादा परेशानी नहीं हुई।

फतेहाबाद। रोडवेज बस में सवार होती महिलाएं। फोटो: हरिभूमि

रोडवेज की 195 बसों ने 250 से अधिक फेरे लगाए

रक्षाबंधन के दिन फतेहाबाद रोडवेज की 195 बसों जिसमें 135 फतेहाबाद डिपू व 60 टोहाना उप डिपो की शामिल हैं, यह तो सामान्य दिनों की तरह सडक पर दौड़ी ही, जो बस दोपहर को वापस लौटी, रोडवेज प्रबंधन ने महिलाओं को राहत देते हुए उनके चालक-परिचालक बदलकर उन्हें दोबारा सडकों पर दौड़ाया। सामान्य दिनों में रोडवेज की प्रतिदिन करीब 35 हजार किलोमीटर बसें चलती है। शनिवार को इन बसों ने 45 हजार किलोमीटर का सफर तय किया। रोडवेज ने सभी कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर इनकी ड्यूटी फतेहाबाद के पुराने बस स्टैण्ड के अलावा भूना, भट्ट, रतिया व टोहाना बस स्टैण्ड पैर लगाई थी ताकि कोई भी बस चालक लापरवाही न करे। आज अधिकारियों की भी यहां स्पैशल ड्यूटी लगी हुई थी।
-सुभाष ढाण्ड, स्टेशन सुपरवाइजर फतेहाबाद

वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश

- 3 आरोपियों को किया काबू, चोरीशुदा मोटरसाइकिल बरामद

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

अपराधियों की धरपकड़ के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत सीआईए फतेहाबाद पुलिस को एक और सफलता मिली है। पुलिस टीम ने वाहन चोरी के मामलों में संलिप्त एक गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से एक चोरीशुदा मोटरसाइकिल बरामद की है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान राजकुमार उर्फ राजू पुत्र चानन राम निवासी जल्लोपुर, जस्सा सिंह उर्फ रवि पुत्र दर्शन सिंह निवासी तामसपुरा तथा सुरेंद्र कुमार उर्फ भाटिया पुत्र कर्मबीर सिंह निवासी तामसपुरा के रूप में हुई है। सीआईए प्रभारी निरीक्षक कुलबीर सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि सहायक उप निरीक्षक राजेश कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम अपराधों की रोकथाम के लिए रतिया क्षेत्र में गश्त पर थी। इस दौरान टीम को गुप्त सूचना मिली कि तीन युवक एक संदिग्ध मोटरसाइकिल पर क्षेत्र में घूम रहे हैं। सूचना के आधार पर नाकाबंदी कर चेकिंग शुरू की गई, जहां कुछ ही देर में तीन युवक एक मोटरसाइकिल पर आते हुए दिखाई दिए। पुलिस ने उन्हें रोका और वाहन के दस्तावेज मांगे, परंतु वे मोटरसाइकिल के किसी भी दस्तावेज को प्रस्तुत नहीं कर सके। जब पुलिस ने ट्रैकिंग सिस्टम की मदद से बाइक की जांच की, तो वह चोरीशुदा पाई गई। इस पर तीनों युवकों को मौके पर काबू कर, नियमानुसार थाना शहर रतिया को सौंपा गया। पुलिस जांच में आरोपियों ने कबूल किया कि उन्होंने यह मोटरसाइकिल 6 अगस्त को चोरी की थी।

फतेहाबाद। चोरीशुदा मोटरसाइकिल सहित गिरफ्तार तीनों युवक।

शेरांवाली नहर टूटी, नरमा व ग्वार की फसल हुई जलमग्न

करीब 50 फुट का कटाव हुआ समय रहते किसानों ने सिंचाई विभाग को दी जानकारी

- सिंचाई विभाग के कर्मचारी मौके पर पहुंचे, हेड बंद करवाया
- ग्वार व नरमा की फसल में जलभराव होने से नुकसान

हरिभूमि न्यूज ⏭चोपटा

नाथूसरी चौपटा क्षेत्र से गुजरने वाली शेरांवाली नहर शनिवार दोपहर को अचानक टूट गई। गांव रंधावा के समीप नहर में करीबन 50 फुट तक कटाव हो गया। इससे ग्वार व नरमा की फसल में जलभराव होने से नुकसान हुआ। नहर टूटने की सूचना मिलते ही सिंचाई विभाग के कर्मचारी तुंरत प्रभाव से मौके पर पहुंचे। इसके बाद नहर मेंनहर हेड से पानी बंद करवा दिया। जानकारी के अनुसार शनिवार दोपहर 2 बजकर 45 मिनट पर गांव रंधावा के समीप शेरांवाली नहर टूट गई। इससे नहर का पानी तेज से बढ़ने लगा। वहीं नहर में पानी के बहाव से कटाव बढ़ने लगा। नहर टूटने की सूचना किसानों ने बेलदार भरत सिंह को दी। इसके बाद बेलदार ने तुरंत प्रभाव से नहर को नहराना हेड से बंद करवा दिया। नहर टूटने से ग्वार व नरमा की 20 एकड़ फसल डूब गई। इससे फसलों को नुकसान हुआ है। नहर टूटने के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है। नहर में इसी 6 अगस्त को पानी छोड़ा गया था। नहर में बाराबंदी के हिसाब से पानी छोड़ जाता है।

पीएम राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए आवेदन 15 तक

सिरसा। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं, जिसकी अंतिम तिथि 15 अगस्त है। यह देशभर के बच्चों की असाधारण उपलब्धियों पर राष्ट्रपति द्वारा हर साल प्रदान किया जाने वाला एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-2025 के तहत बहादुरी, सामाजिक सेवा, पर्यावरण, खेल, कला और संस्कृति, तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले बच्चों, जिनकी आयु 18 वर्ष से कम (31 जुलाई 2025 तक) हो, को ही प्रदान किए जाएंगे, जिसके तहत विभिन्न श्रेणियों में 25 बच्चों का चयन किया जाएगा। स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा आवेदनों की छंटनी के बाद नेशनल कमेटी द्वारा नाम फाइनल किए जाएंगे।

काम बंद होने से परेशान मनरेगा मजदूर सांसद बराला से मिले

- मनरेगा जंगल की सफाई शुरू करने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

मनरेगा के तहत काम बंद होने से मनरेगा मजदूरों के सामने भूखे मरने की नौबत आ गई है। काम न मिलने से परेशान मनरेगा मजदूरों ने शनिवार को सांसद सुभाष बराला से मुलाकात की। मजदूरों ने अपनी मांगों का एक लिखित ज्ञापन सौंपा और काम दिलवाने की गुहार लगाई। राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने श्रमिकों की समस्याओं को गंभीरता से सुना और उन्हें आश्वस्त किया कि वे इस मामले को संबंधित विभागों और अधिकारियों के समक्ष तुरंत उठाएंगे। संबंधित अधिकारियों से बातचीत कर जल्द ही मनरेगा के कार्य शुरू करवाए जाएंगे। ज्ञापन में बताया गया कि क्षेत्र में सडक़, श्मशान भूमि, स्कूल, खेल मैदान और पंचायत घर जैसे कई स्थानों पर जंगल सफाई का कार्य बंद पड़ा है। इसके अलावा खेतों के कच्चे रास्ते, गांव की फिरनी, सरकारी अस्पताल, कॉलेज, एससी चौपाल और ग्राम सचिवालय पर भी काम रुका हुआ है। मजदूरों ने बताया कि ये सभी कार्य लोकनिर्माण विभाग की सीमा से बाहर हैं। मनरेगा के तहत मजदूरों को 100 दिन के रोजगार की गारंटी दी गई है, लेकिन कार्य बंद होने से उनका रोजगार प्रभावित हो रहा है। जंगल सफाई न होने से सांप, बिच्छू, नेवला और सियार जैसे जानवर गांव में आ रहे हैं। ये जानवर लोगों और पशुओं के लिए खतरा बन रहे हैं। इनके काटने से मृत्यु भी हो सकती है। मनरेगा के कार्य से गरीब परिवारों को रोजगार मिलता है। इससे वे अपने परिवार का पालन-पोषण कर पाते हैं। साथ ही सडक़ किनारे उगी झाडिय़ा हटाने से दुर्घटनाओं में कमी आएगी। इससे पैदल यात्री और वाहन ड्राइवर सुरक्षित रहेंगे। मजदूरों ने सांसद बराला से इन कार्यों को जल्द शुरू करवाने की मांग की है। उनका कहना है कि इससे गांव में सुरक्षा बनी रहेगी और गरीब परिवारों को रोजगार मिलेगा। सांसद बराला ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार दोनों ही ग्रामीण विकास और श्रमिकों के रोजगार को प्राथमिकता देती हैं, और मनरेगा जैसी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करना उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी है। बराला ने यह भी कहा कि शीघ्र ही कार्यों को पुनः प्रारंभ कराने के प्रयास किए जाएंगे, ताकि न केवल रोजगार उपलब्ध हो बल्कि ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता और सुरक्षा भी बनी रहे।

टोहाना। सांसद बराला को ज्ञापन सौंपते मनरेगा मजदूर। फोटो: हरिभूमि

कलोठा में दो दिवसीय वार्षिक विशाल मेला संपन्न

रतिया। गांव कलोठा में पीर बाबा फाजिलशाह के वार्षिक दो दिवसीय मेले के आज दूसरे दिन काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने शिरकत की। सेवादारों ने बताया कि पिछले कई वर्षों से गांव कलोठा में पीर बाबा फाजिलशाह की मजार पर समूह कमेटी सदस्यों, ग्राम पंचायत, आसपास के श्रद्धालुओं के सहयोग से बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। मेले के दौरान गांव कलोठा के अलावा मलवाला, अलीका, खाई, पिलछियां, खैरपुर, लालवास, लाली के अलावा अनेक आसपास के गांव से श्रद्धालु पहुंचकर माथा टेकते हैं तथा अपनी मन्नते मांगते हैं। उन्होंने बताया कि जहां पर कोई भी व्यक्ति सच्चे दिल से मन्नत मांगता है तो पीर बाबा उसकी मन्नत अवश्य पूरी करते हैं। मेले के दौरान दुकानदारों द्वारा खिलौने और अन्य सामान की अनेक दुकानें सजाई थी। जहां से लोगों को जमकर खरीदारी करते हुए देखा गया। इस अवसर पर पीर कमेटी की ओर से लंगर भी चलाया गया। कार्यक्रम के दौरान अनेक गायक कलाकारों की पीरों की महिमा का गुणगान किया। प्रधान भजन लाल, सरपंच डॉ मुरारी लाल कलोठा, महेंद्र सिंह चहल, पूर्व सरपंच सुरेश कुमार, रामकिशन, बनवारी लाल, शाम लाल, सतपाल व बलविंद्र गुल्ली आदि मौजूद रहे।

संघ ने कहा, यह काम अध्यापकों से न कराएं

उल्लास योजना में ड्यूटी लगाने का विरोध

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

केन्द्र सरकार के उल्लास कार्यक्रम को लेकर अध्यापकों की ड्यूटी लगाने का हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ ने कड़ा विरोध किया है। संघ का कहना है कि ऐसे गैर शैक्षणिक कार्यों को एनजीओ द्वारा ही करवाया जाना चाहिए क्योंकि हरियाणा सरकार उनको पूरा बजट देती है। अगर अध्यापकों को इस गैर शैक्षणिक कार्य के लिए विवश किया गया तो हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ इसका विरोध करेगा। अध्यापक संघ के फतेहाबाद खण्ड प्रधान सतपाल ढाका, जिला सचिव देसराज माचरा और सर्व कर्मचारी संघ के जिला कोषाध्यक्ष कृष्ण जाखड़ ने कहा कि हरियाणा के सरकारी स्कूलों में प्रवेश लेने वाले अबोध बालकों को अक्षर बोध करवाने की जिम्मेदारी अध्यापकों की है, परंतु हरियाणा सरकार उनको अक्षर ज्ञान करवाना ही नहीं चाहती। इसके विपरीत केंद्र सरकार अपने उल्लास कार्यक्रम को कामयाब करने के लिए अध्यापकों की ड्यूटी गांवों के 15 वर्ष से ऊपर के सभी निरक्षर लोगों की घर -घर जाकर पहचान करना उनका डाटा एकत्रित करके उल्लास पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करवाया जा रहा है। साथ में स्कूल में पढने वाले बच्चों को और अध्यापकों को वालंटियर टीचर बना करके उनको साक्षर बनाने का काम करवा कर सरकार वाहवाही लूटना चाहती है तथा इसकी आड़ में पूरा बजट गोलमाल करना चाहती है।

अध्यापक संघ जिला प्रधान राजपाल मित्ताथल।

- गैर शैक्षणिक कार्य एनजीओ से करवाने की रखी मांग

उल्लास योजना का ठेका एनजीओ को दिया

संघ के जिला प्रधान राजपाल मित्ताथल ने कहा कि केंद्र सरकार ने उल्लास योजना का ठेका एक एनजीओ को दिया गया है तथा कागजों में उसको कामयाब करके बजट को एनजीओ को लुटाने का काम कर रही है जबकि स्कूलों में शिक्षा का बजट घटाया जा रहा है। स्कूलों में बच्चों के बैठने के लिए संसाधन उपलब्ध भी नहीं है। बैठने के लिए कमरे नहीं है, कमरों की छतें टपक रही है। हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ मांग करता है कि ऐसे गैर शैक्षणिक कार्यों को एनजीओ के द्वारा ही करवाया जाना चाहिए क्योंकि हरियाणा सरकार उनको पूरा बजट देती है। अगर अध्यापकों को इस गैर शैक्षणिक कार्य के लिए विवश किया गया तो हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ इसका विरोध करेगा।

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण

1. **लक्ष्यों की पहचान:** अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता:** अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन:** अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी:** विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण

1. **निवेश योजना का निर्माण:** अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि:** निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा

1. **निवेश की निगरानी:** अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

अतिरिक्त सुझाव

1. **विविधीकरण :** अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश :** नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

काम की बात
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, रअगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना
- अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे
- अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

अहम खर्चे : किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्चे : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंग। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

मनोरंजन : कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

खान-पान : बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट,भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कमी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

सेना अधिकारी बनकर डेढ़ लाख ठगने वाला काबू

सिरसा। पुलिस ने सेना अधिकरी बन डेढ़ लाख रुपये की ठगी करने के आरोपी को हरियाणा के पलवल से गिरफ्तार कर लिया है। साइबर थाना प्रभारी सुभाष चंद्र ने शनिवार को बताया कि कमलकांत निवासी ओल्ड कोर्ट रोड सिरसा की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया था। कमलकांत ने शिकायत में बताया कि अज्ञात व्यक्ति ने उसके मोबाइल पर काल कर खुद को आर्मी ऑफिसर बताया और आर्मी के 25 मरीज दिखाने की बात कहकर विश्वास में लिया।

श्री हनुमंत चेरिटेबल हास्पिटल में नेत्र जांच शिविर आज

सिरसा। श्री हनुमंत फाउंडेशन द्वारा जिला अंधता निवारण समिति के सहयोग से आगामी 10 अगस्त को आंखों की जांच एवं मोतियाबिंद के आपरेशन और ब्लड शुगर जांच का 271वां निःशुल्क मासिक चिकित्सा कैंप श्री हनुमंत चेरिटेबल हास्पिटल में आयोजित किया जाएगा। मुख्य परियोजना संयोजक सुमन मित्तल व अध्यक्ष डॉ. आशीष खुराना ने बताया कि शिविर का शुभारंभ हनुमान की ज्योति प्रज्वलित कर किया जाएगा। कैंप में आंखों की बीमारियों की जांच नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रवीण अरोड़ा व डॉ. महिप बंसल करेंगे तथा सफेद मोतिया बिंद के लिए चयनित जरूरतमंद परिवारों के मरीजों के आपरेशन निःशुल्क किए जाएंगे।

पद्म पुरस्कारों के लिए 15 अगस्त तक करें आवेदन

सिरसा। गृह मंत्रालय की ओर से गणतंत्र दिवस 2026 के अवसर पर घोषित किए जाने वाले पद्म पुरस्कार-2026 के लिए ऑनलाइन नामांकन प्रक्रिया जारी है। पद्म पुरस्कारों के नामांकन की अंतिम तारीख 15 अगस्त है। नामांकन/अनुशंसा राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल पर ऑनलाइन प्राप्त की जाएंगी। उपायुक्त शांतनु शर्मा ने बताया कि पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक है। 1954 में स्थापित इन पुरस्कारों की घोषणा हर साल गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है।

रक्षाबंधन पर डीएवी स्कूल में हुई स्पर्धाएं

सिरसा। डीएवी सेनटेनरी पब्लिक स्कूल मे रक्षाबंधन पर राखी मेकिंग, थाली डेकोरेटशन व गिफ्ट रेपिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस आयोजन में कक्षा पहली से पांचवी तक के सभी छात्र छात्राओं ने बड़े उत्साहपूर्वक बढ़-चढक़र भाग लिया व अपनी कला का अद्भुत प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार से अपनी कला को प्रदर्शित किया। गिफ्ट रैपिंग प्रतियोगिता में भी छात्रो ने अपनी रचनात्मकता और कलात्मकता का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न प्रभिन्न प्रकार की पैकिंग शैलियों को प्रदर्शित किया। राखी बनाने में देवांश, अराध्या, संध्या, युग, दिव्यांश, साहिब, भीमांशु, हिया, नीलाक्ष, गुरुपकार, पियांशु, देवश्री, चक्षु, दिया, दृष्टि राजवंश व आर्यन की राखियां सराहनीय रही।

वेद कथाओं से मिलता है आध्यात्मिक लाभः शास्त्री

सिरसा। आर्य समाज मंदिर में श्रावणी उपाकर्म रक्षाबंधन पर्व यज्ञ-सत्संग के माध्यम से मनाया गया। रविंद्र शास्त्री ने बताया कि श्रावणी उपाक्रम किस प्रकार हमारे जीवन में महत्व रखता है। वेद हमें इस माह में किस प्रकार के कार्य करने का संदेश देते हैं। उन्होंने बताया कि वेद कथाओं में सभी जनों को शामिल होना चाहिए। इस मौके पर मंत्री ओमप्रकाश खर्रा, त्रिलोक नाथ, रामलाल सरदाना, मुनीश आर्य, गिरधारी नाथ, भजनोपदेशक ओमप्रकाश सहित अन्य महानुभाव मौजूद थे। रविंद्र शास्त्री ने बताया कि हर माह की भांति इस माह भी आर्य समाज मंदिर में आगामी रविवार को मासिक सत्संग का आयोजन किया जाएगा।

पूजा-अर्चना के बाद राष्ट्रीय ध्वजारोहण कर मेले का शुभारंभ किया

उत्तर भारत के प्रसिद्ध गोगाजी महाराज के मेले का शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭ चोपटा

हरियाणा की सीमा से सटे राजस्थान के सांप्रदायिक एवं सद्भावना के प्रतीक उत्तर भारत के प्रसिद्ध गोगामेड़ी मेले का पूर्णिमा शनिवार को विधिवत शुभारंभ हुआ। जिला कलेक्टर डॉ. खुशाल यादव, एसपी हरिशंकर, भादरा विधायक संजीव बेनीवाल, नोहर पंचायत समिति प्रधान सोहन ढिल, गोगामेडी सरपंच महंत रूपनाथ आदि ने गोगाजी की समाधि पर धौक लगाकर क्षेत्र की खुशहाली की कामना की।

पूजा-अर्चना के बाद राष्ट्रीय ध्वजारोहण कर मेले का शुभारम्भ किया। इस मौके पर स्कूली छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय गान और गोगामेड़ी पुलिस थाने के पुलिसकर्मियों ने सशस्त्र सलामी दी। 9 अगस्त से 7 सितंबर 2025 तक एक माह तक चलने वाले मेले में इस वर्ष 40 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है। सभी प्रकार की व्यवस्थाओं को बनाए रखने के लिए सुरक्षा की दृष्टि से मेले को कई जोन में विभाजित किया गया है। सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से पूरे मेला क्षेत्र में भारी संख्यां में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए है। इस बार वाहन पार्किंग सहित पूरे मेले में सीसीटीवी कैमरों की चप्पे-चप्पे पर नजर रहेगी। मंदिर के चढावे की निगरानी के लिए गोगाजी महाराज मंदिर में कैमरा लगाया गया है मेला क्षेत्र में गोगामेड़ी थाना प्रभारी के नेतृत्व में महिला पुलिसकर्मी, आरएसी, होमगार्ड जवान, घुड़सवार पुलिस कर्मियों सहित सादा वर्दी में पुलिस जवान चौबीसों घंटों तैनात रहेंगे। बता दें कि गोगामेड़ी मेले में लोक देवता जाहरवीर श्री गोगाजी महाराज के दर्शन करने के लिए हरियाणा, राजस्थान सहित देश भर के विभिन्न राज्यों से हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई सभी धर्मों के लाखों की तादाद में श्रद्धालु यहां आते है।

चोपटा। मेले का शुभारंभ करते डीसी, विधायक व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हर वर्ग की आस्था का प्रतीक है गोगामेड़ी मेला

सभी धर्म के लोगों की आस्था के प्रतीक उत्तर भारत के प्रसिद्ध मेले गोगामेड़ी में हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात व हिमाचल प्रदेश से लाखों लोग लोक देवता गोगा जी की समाधि पर धोक लगाने व सजदा करने लगे हैं। गोगा जी को हिंदू लोग वीर के रूप में तथा मुस्लिम पीर के रूप में पूजते हैं। गोगा जी की समाधि उनके मस्जिदनुमा मंदिर में स्थित है। समाधि पर अश्वारोही गोगा जी की मूर्ति उत्कीण है। गुरू शिष्य परंपरा के अनुसार गोगामेड़ी आने वाले श्रद्धालु पहले गोगाजी के मंदिर से दो किलोमीटर दूर गोगाणा में पवित्र तालाब में स्नान कर गुरू गोरखनाथ के धूणे पर शीश नवाते हैं। बाद में गोगामेड़ी मंदिर में पूजा अर्चना करते है। कई भक्त पैदल व कुछ कनक दण्डवत आते है।

गोगामेड़ी का पशु मेला भी शुरू हुआ

गोगामेड़ी में हर वर्ष आयोजित होने वाले पशु मेला भी शुरू हो गया है। पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक ने कहा कि ऊंटों की बिक्री का कार्य शुरू हो गया है। उन्होंने कहा कि पशु मेला क्षेत्र में पर्याप्त रोशनी पेयजल व पशुओं के पीने के पानी की व्यवस्था की गई है। ऊंट व्यापारी अपने ऊंटों के टोलों के साथ डेरा डाले हुए हैं। हरियाणा के किसान भी ऊंटों के साथ पहुंचने शुरू हो गये है। यह मेला 9 अगस्त से शुरू होकर 7 सितंबर तक चलेगा। पशुपालन विभाग द्वारा आयोजित मेले में हरियाणा व राजस्थान के किसान व ऊंट व्यापारी ऊंटों के साथ आते हैं।

इलाज के लिए आर्थिक सहायता लेने की प्रक्रिया हुई सरल

- मुख्यमंत्री राहत कोष से मिलने वाली आर्थिक सहायता की राशि सीधे आवेदक या लाभार्थी के बैंक खाते में ट्रांसफर की जाएगी
- परिवार पहचान पत्र आईडी के से पोर्टल पर कर सकते हैं आवेदन

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

हरियाणा सरकार द्वारा आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के दृष्टिगत मुख्यमंत्री राहत कोष के तहत चिकित्सा आधार पर वित्तीय सहायता प्राप्त करने वालों को सरल पोर्टल पर सुविधा प्रदान की जा रही है। इससे यह प्रक्रिया और अधिक सरल एवं आसान हो गयी है। अब आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थी आवेदक सरल पोर्टल के माध्यम से सुविधा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मुख्यमंत्री राहत कोष से मिलने वाली आर्थिक सहायता की राशि सीधे आवेदक या लाभार्थी के बैंक खाते में ट्रांसफर की जाएगी।

उपायुक्त मनदीप कौर ने बताया कि आवेदक अपनी पीपीपी यानी परिवार पहचान पत्र आईडी के माध्यम से सरल पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। इस प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए आवेदकों को अपने चिकित्सा बिल, ओपीडी बिल आदि जैसे अन्य संबंधित दस्तावेजों को अपलोड कर मुख्यमंत्री राहत कोष से चिकित्सा आधार पर वित्तीय सहायता के लिए आवेदन कर सकते हैं। मुख्यमंत्री राहत कोष से मिलने वाली आर्थिक सहायता की राशि सीधे आवेदक या लाभार्थी के बैंक खाते में ट्रांसफर की जाएगी। यदि कोई आवेदक दूसरे राज्य में इलाज करवा रहा है और वह चाहता है कि उपचार की राशि सीधे अस्पताल को मिले तो वह संबंधित अस्पताल की बैंकिंग डिटेल्स भी सांझा कर सकता है। मुख्यमंत्री राहत कोष से आर्थिक सहायता के रूप में इलाज खर्च का 25 प्रतिशत पैसा ही मिलेगा जिसकी अधिकतम सीमा एक लाख रुपए निर्धारित की गई है, वहीं आवेदक वित्त वर्ष में केवल एक बार ही इस सुविधा का लाभ ले सकता है।

उपायुक्त मनदीप कौर ने कहा कि योजना में किए गए बदलावों के तहत यदि कोई बीमारी आयुष्मान भारत जन आरोग्य योजना में कवर नहीं हो रही है, तो आयुष्मान योजना के लाभार्थियों को भी इस योजना के तहत लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री राहत कोष के अंतर्गत आर्थिक सहायता के लिए जिला स्तरीय कमेटी का गठन किया गया है, जिसमें संबंधित एमपी, संबंधित एमएलए, उपायुक्त, सिविल सर्जन, नगर परिषद व नगर पालिकाओं के अध्यक्ष, जिला परिषद के चेयरमैन, पंचायत समिति के चेयरमैन को सदस्य और नगराधीश को नोडल अधिकारी बनाया गया है।

व्यापार मंडल अनाजमंडी द्वारा नए वाटर कूलर का हुआ शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

व्यापार मंडल अनाजमंडी द्वारा पुरानी अनाजमंडी के गेट नंबर 4 के पास नए वाटर कूलर का शुभारंभ किया गया। व्यापार मंडल के प्रधान जगदीश भादू ने रिबन काटकर तथा पूजा अर्चना कर वाटर कूलर का शुभारंभ किया तथा सभी पदाधिकारियों, किसानों, व्यापारियों व मजदूरों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर लड्डूओं का प्रसाद भी वितरित किया गया।

जगदीश भादू ने सभी को रक्षा बंधन पर्व की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि व्यापार मंडल अनाजमंडी हमेशा ही जनहित के कार्यों में अग्रणीय रहती है। गर्मी के दिनों में काम करते हुए मजदूरों, किसानों व व्यापारियों को ठण्डे पानी की सेवा मिल सके, इसलिए व्यापार मंडल द्वारा यह वाटर कूलर लगवाया गया है। इससे पहले भी व्यापार मंडल द्वारा अनाजमंडी में अनेक वाटर कूलर लगवाए जा चुके हैं। आगे भी सेवा के कार्य हमारी ओर से जारी रहेंगे। उन्होंने बताया कि मंडी की सुरक्षा के लिए व्यापार मंडल द्वारा 15 चौकीदार रखे हुए हैं, और दिन और रात में मंडी की सुरक्षा में जुटे रहते हैं। व्यापार मंडल द्वारा सुरक्षा के मद्देनजर मंडी में सीसीटीवी कैमरे भी लगवाए गए हैं।

फतेहाबाद। अनाज मण्डी में वॉटर कूलर का शुभारंभ करते प्रधान जगदीश भादू व अन्य व्यापारी।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर वरिष्ठ उपप्रधान राम निवास शर्मा, उप प्रधान राजेन्द्र प्रसाद, सचिव रमेश नागपाल, सहसचिव राजेन्द्र जिंदल, कोषाध्यक्ष प्रवीण गर्ग, विनोद कुमार गर्ग, अजीत सिंह, हरमीत झ्र्षसह, साहिल चौधरी, भगवानदास गोयल, धर्मपाल गिल्होत्रा, अशोक गुप्ता, संजय कुमार, देवेन्द्र पिंकी, अनिल बंसल, शंकर कालापीला, अशोक कुमार, सज्जन कुमार, बलविन्द्र सिंह, मनीराम, विजय कक्कड़ सहित अनेक व्यापारी मौजूद रहे।

तीरंदाजों का हुआ राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन

प्राचार्या डॉ. रमा दहिया ने हर्ष व्यक्त करते हुए छात्रों को शुभकामनाएं दीं तथा कहा कि हमारे विद्यार्थी भविष्य में देश का गौरव बढ़ाएंगे व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता प्राप्त करेंगे

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

दिल्ली पब्लिक स्कूल के छात्रों ने तीरंदाजी प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें साहिब ने प्रथम, अल्फाज और कैरव ने द्वितीय एवं हितेश ने विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए जिला स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। इनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर इन दोनों विद्यार्थियों का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया है। प्राचार्या डॉ. रमा दहिया ने हर्ष व्यक्त करते हुए छात्रों को शुभकामनाएं दीं तथा कहा कि हमारे विद्यार्थी भविष्य में देश का गौरव बढ़ाएंगे और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता प्राप्त करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यालय में निरंतर खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे विद्यार्थी अनुशासन, परिश्रम एवं समर्पण जैसे मूल्यों को आत्मसात करते हैं। छात्रों ने अपनी सफलता का श्रेय विद्यालय के खेल प्रशिक्षकों हिमांशु सोनी एवं रवि कंबोज को दिया, जिनके मार्गदर्शन एवं नियमित अभ्यास से यह उपलब्धि संभव हो सकी। यह उपलब्धि न केवल विद्यालय, अपितु संपूर्ण जिले के लिए गर्व का विषय है। प्रतियोगिता में छात्रों की सहभागिता और सफलता से यह प्रमाणित होता है कि अनुशासित प्रशिक्षण, समर्पण और उचित दिशा-निर्देश के साथ किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति संभव है।

न्यूज डायरी

सिर्फ एक कॉल से फंस सकते हैं जाल में : सिद्धांत जैन

फतेहाबाद। साइबर ठगी की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए जिला पुलिस द्वारा समय-समय पर जनहित में एडवाइजरी जारी कर आमजन को जागरूक किया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने नागरिकों से अपील की है कि वे सतर्क और जागरूक रहें तथा किसी भी प्रकार की साइबर धोखाधड़ी से स्वयं को सुरक्षित रखें। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि अनजान नंबर से आया वीडियो कॉल आपके लिए मुसीबत बन सकता है। साइबर अपराधी अब एक नया तरीका अपनाकर लोगों को ब्लैकमेल कर रहे हैं। वे पहले अज्ञात नंबर से वीडियो कॉल करते हैं। कॉल उठाते ही सामने अश्लील वीडियो चलती है, और उस समय का स्क्रीनशॉट या रिकॉर्डिंग कर ली जाती है, जिसमें दोनों पक्षों की तस्वीर कैद हो जाती है। इसके बाद अपराधी उस वीडियो को सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल करते हैं, जिससे पीड़ित व्यक्ति मानसिक दबाव में आकर पैसे दे देता है। जैन ने कहा कि यदि किसी अज्ञात नंबर से वीडियो कॉल आता है तो उसे कभी भी तुरंत न उठाएं। यदि गलती से कॉल रिसीव कर लिया गया है, तो अपना चेहरा न दिखाएं। पहले सामने वाले को पहचानने का प्रयास करें।

विभाजन विभीषका स्मृति दिवस के लिए प्रदेश को चार जोनों में बांटा

फतेहाबाद। पंचनद स्मारक ट्रस्ट द्वारा 14 अगस्त को फरीदाबाद में आयोजित किए जाने वाला विभाजन विभीषका स्मृति दिवस को लेकर शनिवार को कुरुक्षेत्र में आयोजित बैठक में प्रदेश को चार जोनों में बांटा गया। बैठक की अध्यक्षता पंचनद स्मारक ट्रस्ट के प्रदेशाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक सुभाष सुधा ने की। बैठक की जानकारी देते हुए पंचनद के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य दर्शन नागपाल ने बताया कि जोन 1 में फतेहाबाद, हिसार व सिरसा जिले पड़ते हैं। इन जिलों के लिए पंचनद के राष्ट्रीय सचिव विजय ढल व देवराज मनचंदा को प्रभारी बनाया गया है। दोनों प्रभारी विभाजन विभीषका स्मृति दिवस को कामयाब बनाने के लिए अब इन जिलों में पंचनद सदस्यों की बैठक लेंगे और वहां जाने वाले साधनों बारे समीक्षा करेंगे। दर्शन नागपाल ने बताया कि बैठक में प्रदेश के तीन अन्य जोनों के प्रभारी सभी जिलों में जाकर विभाजन विभीषका स्मृति दिवस कार्यक्रम को कामयाब बनाने के लिए बैठकें करेंगे। उन्होंने बताया कि सुभाष सुधा पंचनद के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी धर्मदेव के दिशा-निर्देश पर प्रदेश के सभी जिलों के प्रधानों के साथ बैठक करेंगे।

अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष से मिला हजरस प्रतिनिधिमंडल

सिरसा। हजरस के जिलाध्यक्ष सुरेश रंगा के नेतृत्व में हजरस की जिला कार्यकारिणी हरियाणा अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष रविंद्र बलियाला से रेस्ट हाउस में मिली और उन्हें एक ज्ञापन सौंपा। सुरेश रंगा ने अध्यक्ष को बताया कि हरियाणा लोक सेवा आयोग के माध्यम से मौजूदा समय में हरियाणा उच्चतर शिक्षा विभाग में सहायक प्रोफेसर की विभिन्न पदों के लिए चल रही भर्ती प्रक्रिया 2024 व सभी भर्तियों में हरियाणा अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों को सामान्य श्रेणी में अर्हता प्राप्त करने पर उन्हें सिर्फ आरक्षित श्रेणी में ही सीमित न रखकर भारतीय संविधान के निर्माण अनुसार सामान्य श्रेणी में शामिल होने के लिए समान अवसर प्रदान किया जाए। उन्होंने कहा कि इस संबंध में हाईकोर्ट द्वारा दिए गए आदेशों को लागू करवाया जाए। एचपीएससी द्वारा मौजूदा समय में चल रही सहायक प्रोफेसर भारती में अनुसूचित जाति की उम्मीदवारों को नियमानुसार लिखित परीक्षा में काम से कम पांच प्रतिशत की छूट प्रदान की जाए।

यूथ मैराथन के लिए वेबसाइट की लांच

सिरसा। आमजन को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने और नशे के खिलाफ जन जागरूकता के लिए 24 अगस्त को डबवाली में यूथ मैराथन का आयोजन किया जाएगा। यूथ मैराथन के लिए जिला प्रशासन द्वारा वेबसाइट लांच की गई है। यूथ मैराथन में हिस्सा लेने के इच्छुक प्रतिभागी अब घर बैठे ही वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन निःशुल्क रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। यूथ मैराथन में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि होंगे। उपायुक्त शांतनु शर्मा ने बताया कि यूथ मैराथन तीन दूरी वर्गों 5 किलोमीटर, 10 किलोमीटर और 21.1 किलोमीटर में आयोजित की जाएगी, जिसमें अंडर 18, 18 से 45, 45 से 60 और 60 से ऊपर आयु वर्ग अनुसार प्रतिभागी शामिल होंगे। प्रतियोगिता में विजेताओं को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया जाएगा। उपायुक्त ने कहा कि यूथ मैराथॉन का मुख्य उद्देश्य नशे के खिलाफ जनजागरूकता फैलाना और युवाओं में स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवनशैली के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके माध्यम से लोगों को नशे से होने वाले नुकसान के प्रति सजग करना, उनकी शारीरिक एवं मानसिक सेहत को बेहतर बनाना और समाज में नशामुक्त वातावरण स्थापित करना लक्ष्य है।

बैंकिंग क्षेत्र में मंडल कार्यालय सिरसा रहा प्रथम

सिरसा। पीएमश्री जवाहर नवोदय विद्यालय ओढ़ां में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिरसा की छमाही समीक्षा बैठक राजीव कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उक्त छमाही बैठक में नराकास सिरसा के सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। नराकास सिरसा के तत्वावधान में नराकास सिरसा के सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, जिसमें विभिन्न सदस्य कार्यालयों द्वारा सहभागिता की गईद्य नराकास सिरसा के तत्वावधान में वर्ष 2024 के लिए नराकास सिरसा के सभी कार्यालयों के लिए राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्य हेतु विभिन्न पुरस्कारों का प्रावधान रखा गया। उक्त बैठक में विभिन्न क्षेत्रों में राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु उत्कृष्ट कार्यों के लिए केंद्र एवं भारत सरकार के कार्यालय/उपक्रम/राष्ट्रीयकृत बैंकों को अध्यक्ष द्वारा शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष ने विभिन्न क्षेत्रों में पुरस्कृत कार्यालयों को बहुत-बहुत बधाई दी।

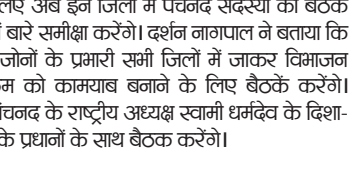

श्री चैतन्य टेक्नो स्कूल ने बनाया कीर्तिमान

लगातार 13वीं बार एनएसएस स्पेस सेटलमेंट कॉन्टेस्ट किया अपने नाम

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

गांव मोरीवाला स्थित श्री चैतन्य टेक्नो स्कूल के विद्यार्थियों ने लगातार अपनी प्रतिभा के बल पर निरंतरता में 13वीं मर्तबा एनएसएस स्पेस सेटलमेंट कॉन्टेस्ट अपने नाम किया। प्रतिभागियों की इस अनूठी उपलब्धि पर विद्यालय प्रबंधन ने उन्हें सम्मानित किया। काबिलेजिक्र है कि अमेरिका की प्रतिष्ठित संस्था नासा और नेशनल स्पेस सोसायटी द्वारा आयोजित स्पेस सेटेलमेंट कांटेस्ट-2025 में इस वर्ष भी श्री चैतन्य टेक्नो स्कूल के विद्यार्थियों ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए लगातार 13वें वर्ष विश्व चैंपियन का खिताब हासिल किया। इस वर्ष की प्रतियोगिता में श्री चैतन्य टेक्नो स्कूल ने विश्व स्तर पर 30 पुरस्कार जीतकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया, जिसमें क्रमशः विश्व में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार जैसे शीर्ष स्थान भी शामिल हैं। अहम बात यह है कि भारत से चयनित 60 पुरस्कार विजेता प्रोजेक्ट्स में से 50 फीसदी यानी 30 प्रोजेक्ट्स अकेले श्री चैतन्य संस्थान के थे, जिससे संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता, शिक्षकों के समर्पण और छात्रों की नवाचार क्षमता का पता चलता है। इसी कड़ी में शनिवार को विद्यालय में आयोजित सम्मान समारोह में विद्यालय प्रधानाचार्या जीना धुरिया ने प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त करने तथा इसमें भाग लेने वाले छात्रों को ट्रॉफी एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया।

यज्ञ से जुड़कर पर्व को मनाने से हमारा जीवन श्रेष्ठ होता है : अरूण ग्रोवर

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

आर्य समाज सुंदर नगर में श्रावणी उपाकर्म व रक्षाबंधन पर्व के शुभ अवसर पर यज्ञ सत्संग किया गया। इस अवसर पर सभी आर्यजनों ने ऊर्जा व उत्साह से अपने कर्तव्यों को धारण कर धर्म की रक्षा हेतु संकल्प के साथ नवीन यज्ञोपवीत भी धारण किए। यज्ञ के ब्रह्मा पुरोहित दीपक शास्त्री ने वैदिक मंत्रों का उच्चारण कर यज्ञ में आहुतियां डलवाई। उन्होंने कहा कि श्रावण मास श्रवण से बना है, जिसका अर्थ है सुनना। वैदिक काल में ऋषि महर्षि जंगल में वर्षा की अधिकता के कारण गांव के निकट आकर रहते थे और गांव के लोगों को वेद धर्म की शिक्षा देते थे जिसे लोग ध्यान से श्रवण करते थे। इस कारण वर्षा ऋतु को श्रावण मास कहा गया और विशेष यज्ञ किया करते थे।

दीपक शास्त्री ने कहा कि प्राचीन काल के पश्चात वेदों का पठन-पाठन का प्रचार न्यून हो जाने पर चातुर्मास नित्य वेद पारायण की परिपाटी उठ गई और जनता प्राचीन उपाकर्म को एक ही दिन का पर्व बना लिया। वर्तमान समय में इस पर्व को रक्षाबंधन के नाम से जाना जाता है जो कि यह परिपाटी चित्तौड़ की महारानी कर्णावती ने मुगल बादशाह हुमायूं को बहादुर शाह से अपनी रक्षा के लिए राखी भेजी थी। जिससे उसने चित्तौड़ पहुंचकर उसकी सहायता की थी और चित्तौड़ का बहादुर शाह के आक्रमण से उद्धार किया था, तब से यह पर्व रक्षा सूत्र बांधकर मनाना प्रचलित हो गया।

फतेहाबाद। श्रावणी उपाकर्म व रक्षाबंधन पर्व पर यज्ञ में आहूति डालते आर्य समाज के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

धार्मिक सावन पूर्णिमा पर शिव और चन्द्रमा को प्रसन्न करने के लिए विशेष पूजा अर्चना करते हैं

पूर्णिमा के साथ ही सावन मास का हुआ समापन, भादो माह शुरू

पौराणिक कथाओं के अनुसार महादेव के विष पीने के बाद उनके शरीर का तापमान गर्म हो गया

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

शनिवार को सावन माह की पूर्णिमा पर भगवान शिव के जलाभिषेक के साथ ही सावन मास का समापन हो गया। शनिवार को शहर के विभिन्न मंदिरों में शिवभक्तों ने पंचामृत से जलाभिषेक कर भगवान शिव का पूजन किया।

पौराणिक कथाओं के अनुसार महादेव के विष पीने के बाद उनके शरीर का तापमान गर्म हो गया, जिसे शांत करने के लिए उन्होंने अपने माथे पर चन्द्रमा को धारण किया। अब चूंकि चन्द्रमा महादेव के माथे पर निवास करते हैं, इसलिए सावन पूर्णिमा पर शिव और चन्द्रमा को प्रसन्न करने के लिए शिवभक्त विशेष पूजा अर्चना करते हैं। महिलाएं व्रत रखती है।

श्री श्याम मंदिर फतेहाबाद के पुजारी सोनू शर्मा के अनुसार सावन मास का शुभारंभ 11 जुलाई को हुआ था। शनिवार को रक्षाबंधन के दिन सावन के महीने का समापन हो गया और रविवार को भादो का शुभारंभ हो गया।

शनिवार को पड़ने वाली पूर्णिमा का अपने आप में विशेष महत्व है। इस दिन अमरनाथ, नीलकंठ सहित सभी ज्योर्तिलिंगों में एक विशेष पूजा की जाती है। तत्पश्चात भादो का शुभारंभ होता है। इसी दिन ही रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता है। फतेहाबाद के श्री श्याम मंदिर, रघुनाथ मंदिर, अमर ज्योति मंदिर, शिवालय मंदिर, ब्रह्मकुमारीज विश्वविद्यालय, सतगुरू कृपा अपना घर, देवी मंदिर, श्री कृष्ण गौशाला में आज हवन यज्ञ किए गए। जहां पर शिवपूजा के साथ-साथ रक्षाबंधन का पर्व भी मनाया गया।

फतेहाबाद। श्री श्याम मंदिर में शिवलिंग पर जल चढ़ाते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

रक्षाबंधन को लेकर पुलिस अलर्ट, चौक-चौराहों पर तैनात रहे जवान, नाकाबंदी भी की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

रक्षाबंधन के पर्व को देखते हुए शनिवार को पुलिस प्रशासन अलर्ट मोड़ पर रही। रक्षाबंधन का पावन पर्व जिले में शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हो, इसके लिए पुलिस प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के निर्देशानुसार जिले के शहरों में प्रमुख बाजारों, भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर विशेष सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। बस स्टैण्ड पर लोगों की भीड़ को देखते हुए पुलिस द्वारा स्पेशल टीमों को वहां तैनात किया गया था।गांवों और शहरों के प्रमुख बाजारों, भीड़भाड़ वाले स्थानों, धार्मिक स्थलों और बस स्टैंडों पर पुलिस की अतिरिक्त तैनाती की गई है, ताकि आमजन को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े और वे पर्व को सुरक्षित वातावरण में मना सकें। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के निर्देशानुसार सभी थाना प्रभारियों, चौकी प्रभारियों व पुलिस अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के आदेश दिए गए हैं कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में नियमित पैदल गश्त करें, संदिग्ध गतिविधियों पर सतर्क नजर रखें तथा आमजन से संवाद कर उन्हें सुरक्षा का भरोसा दिलाएं। शनिवार को रक्षाबंधन को लेकर बाजारों में भीड़ उमड़ी रही। इस कारण बड़े वाहनों के आने से बार-बार जाम लग रहा था। इसका संज्ञान लेते हुए एसपी सिद्धांत जैन ने ट्रैफिक पुलिस को निर्देश दिए, जिसके बाद शनिवार सुबह से ही बैरिकेड्स लगवा कर पुलिसकर्मी जवाहर चौक पर तैनात कर दिए गए थे। पुलिस कर्मी बड़े वाहनों को रोककर दूसरी तरफ भेज रहे थे। जिले के शहर फतेहाबाद, रतिया व टोहाना के बाजारों में त्यौहार के दिन उमडऩे वाली भीड़ को देखते हुए शहरों में बेरिकेडिंग की गई है।

फतेहाबाद। रक्षाबंधन के दिन जिलेभर में तैनात पुलिस की टीमें। फोटो :हरिभूमि

थाना रोड शहर का मुख्य बाजार

बता दें कि थाना रोड फतेहाबाद का प्रमुख बाजार है। चार मरला कालोनी मार्किट, धर्मशाला रोड, जवाहर चौक, फव्वारा चौक, ठाकर बस्ती आदि जाने के लिए लोग थाना रोड से ही गुजरते हैं जिस कारण त्यौहार के दिनों में यहां जाम की स्थिति बनी रहती है। शनिवार को सुबह से ही काफी संख्या में लोग खरीदारी करने के लिए फतेहाबाद के बाजारों में पहुंच रहे थे। इस कारण पुलिस ने बेरिकेड्स लगाकर बड़े वाहनों को रोकने की व्यवस्था की है। एसपी से निर्देश मिलने के बाद अब पुलिसकर्मियों को दिनभर बाजार में व्यवस्था पर सक्रियता से निगरानी रखने के लिए कहा गया। पुलिसकर्मी जवाहर चौक से लेकर फव्वारा चौक तक लगातार गश्त करते रहे ताकि बाजार में जाम की स्थिति न बने।

पुलिस कर्मचारियों को भी तैनात किया

रक्षाबंधन के दौरान महिलाओं और बच्चों की अधिक मौजूदगी को देखते हुए महिला पुलिस कर्मियों की विशेष तैनाती की गई है। साथ ही, ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए यातायात पुलिस को अतिरिक्त सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। पुलिस की प्राथमिकताएं प्रमुख बाजारों, धार्मिक स्थलों, बस स्टैंड्स व रेलवे स्टेशन पर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती, महिला पुलिस कर्मियों द्वारा बाजारों में पैदल गश्त और जागरूकता अभियान है। ट्रैफिक व्यवस्था को व्यवस्थित रखने हेतु विशेष ड्यूटी लगाई गई थी।

सिद्धांत जैन, एसपी फतेहाबाद

जिलाभर में श्रद्धा एवं उल्लास से मनाया गया रक्षाबंधन पर्व

बहनों ने भाइयों की कलाई पर बांधी राखी बाजारों में देर शाम तक रही चहल-पहल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

भाई-बहन के अटूट प्रेम और श्रद्धा का पर्व रक्षाबंधन शनिवार को जिले में धूमधाम से मनाया गया। जिलाभर के मंदिरों, गौशालाओं, अनाथालयों, ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय व सतगुरू कृपा अपना घर में महिलाओं ने जाकर प्रेम श्रद्धास्वरूप राखी बांधी। इस बार रक्षाबंधन पर भ्रदा काल का साया न होने के कारण पूरा दिन बहनों ने अपने भाइयों का टीका किया और उन्हें राखी बांधते हुए उनके स्वस्थ और खुशहाल जीवन की कामना की। इसके साथ ही भाइयों ने भी बहनों की सुरक्षा का संकल्प लिया। जिले के शहरी और ग्रामीण इलाकों में रक्षाबंधन का पर्व पूरे उल्लास के साथ मनाया गया। महिलाएं अपने भाइयों के पास राखी बांधने के लिए दूर-दराज से आई। शनिवार को तीन साल बाद भद्रा का साया न होने से पूरा दिन ही स्वार्थसिद्धि योग के समय बहनों ने भाई को राखी बांधी। दरअसल तीन साल बाद यह संयोग बना है। इससे पूर्व बहनें मंदिरों के पुजारियों व ज्योतिषों से राखी बांधने का समय, शुभ संयोग का इंतजार करती थी। रक्षाबंधन को लेकर शनिवार से ही बाजारों में खासी भीड़ देखी गई। शनिवार देर रात तक बाजारों में चहल-पहल रही। मिठाईयों की दुकानों के अलावा, राखी की स्टालों, किरयाणे की दुकानों व धार्मिक साज-सज्जा का सामान बेचने वालों पर देर रात तक लोगों की भीड़ उमड़ी रही। शनिवार को अलसुबह ही बाजारों में शामियाने लग गए। दुकानदारों ने दुकानों के बाहर मिठाई व राखियों की स्टालें लगाई, जहां पर बाहर से आ रहे लोगों ने जमकर खरीददारी की। इस बार मिठाई के अलावा ड्राई फ्रूट, नारियल, चॉकलेट के गिफ्ट पैक्स की काफी बिक्री हुई।

सांसद बराला को ब्रह्माकुमारी बहनों ने बांधी राखी

टोहाना। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारी बहन कौशल्या और अन्य बहनों ने राज्यसभा सांसद सुभाष बराला को राखी बांधकर बधाई दी और उनके स्वस्थ, सुखमय व दीर्घायु जीवन की कामना की। सांसद सुभाष बराला ने कहा कि रक्षाबंधन केवल एक पारंपरिक पर्व ही नहीं, बल्कि भाई-बहन के पवित्र रिश्ते, स्नेह, विश्वास और सुरक्षा के अटूट बंधन का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आज के समय में इस पर्व का अर्थ सिर्फ रिश्तों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि समाज में एक-दूसरे की सुरक्षा, सम्मान और सहयोग की भावना को भी मजबूत करना चाहिए। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संगठन की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्था समाज में आध्यात्मिक जागृति, नैतिक मूल्यों और सकारात्मक सोच के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इनके सेवा कार्य न केवल व्यक्ति के जीवन को बदलते हैं बल्कि समाज को भी सही दिशा देने में सहायक होते हैं।

भाजपा जिलाध्यक्ष ने ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में बंधवाई राखी

भाजपा जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा ने रक्षाबंधन का पर्व समाज के प्रति समर्पित होते हुए मनाया। सर्व प्रथम प्रवीण जोड़ा ने अशोक नगर स्थित ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ब्रह्मकुमारी मोहिनी बहन का रक्षाबंधन पर पवित्र संदेश श्रवण किया एवं उनसे राखी बंधवा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर आश्रम में बने ओम शांति म्यूजियम को देखा एवं वहां भैया जी ने प्रदर्शन के माध्यम से जीवन के रहस्यों के विषय में अवगत करवाया। इसके अलावा बीजेपी जिला कार्यालय में डीएनटी समाज की बेटियों की बेटियों से जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा ने राखी बंधवाकर उन्हें आशीर्वाद दिया तथा उपहार भेंट किये। इस अवसर पर भाजपा के जिला महामंत्री अशोक जाखड़ व विकास ललौदा, जिला उपाध्यक्ष भीम लाम्बा, कार्यालय सचिव शम्मी ढींगड़ा, पार्षद जगदीश नायक, सुल्तान नायक, बनवारी लाल व अन्य मौजूद रहे।

रतिया। बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हुई।

रतिया में धूमधाम से मनाया गया रक्षाबंधन का त्योहार

रतिया। रक्षा बंधन के पर्व को लेकर आज शहर में खूब चहल-पहल रही और दुकानदारों द्वारा पर्व को देखते हुए अपनी दुकानों को विशेष तौर से सजाया गया। अनेक दुकानों से आज बहनों ने अपने भाई की कलाई पर राखी बांधने के लिए सुंदर-सुंदर राखियों की खरीददारी की। शहर में आज सुबह से ही बहनों ने अपनी भाईयों की कलाइयों पर राखी बांधी व उनकी आयु लंबी होने की दुआ की।

आज शहर में राखी व मिठाईयों की दुकानों की पूरी सजावट की गई थी, जहां पर भारी भीड़ देखने को मिल रही थी। रक्षाबंधन के अवसर पर बड़ों के साथ-साथ छोटे-छोटे बच्चों में भी काफी उत्साह देखा गया तथा अनेक छोटे-छोटे बच्चे अपनी कलाइयों पर विभिन्न डिजाइनों की रंग-बिरंगी राखियां बांधे हुए थे। अनिता, कविता, मोनिका, वर्षा, ममता, बबिता आदि महिलाओं ने बताया कि वे हर साल नए-नए डिजाइनों की राखियां खरीदना पसंद करती हैं। उन्होंने बताया कि पूर्व में तो रक्षा बंधन पर भाई की कलाई पर मात्र मौली आदि का धागा बांध दिया जाता था,लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब तो नए-नए डिजाइनों में एक से बढक़र एक राखी आ गई है। उनका कहना है सुंदर राखी ही कलाई पर बंधी हुई अच्छी लगती है। रक्षा बंधन के चलते आज बसों में भी महिलाओं की काफी भीड़ देखने को मिली।

अपेक्स कॉन्वेंट स्कूल में सांस्कृतिक उल्लास के साथ रक्षाबंधन पर्व का आयोजन

फतेहाबाद। सतीश कालोनी स्थित अपेक्स कॉन्वेंट स्कूल में रक्षाबंधन पर्व हर्षोल्लास और रचनात्मक गतिविधियों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में राखी मेकिंग, लुंबी मेकिंग, टैटू मेकिंग तथा पोस्टर मेकिंग जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाशक्ति और कला का सुंदर प्रदर्शन किया। विद्यालय के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने कौशल से सभी को प्रभावित किया। कार्यक्रम का माहौल रंगीन और उल्लासपूर्ण रहा। समापन सत्र में प्रधानाचार्य उमंग कक्कड़ ने विद्यार्थियों को रक्षाबंधन के पावन पर्व के महत्व से अवगत कराते हुए भाई-बहन के रिश्ते में निहित स्नेह, सम्मान और सहयोग का संदेश दिया। प्रबंधन के निदेशक अमित मक्कड़ ने बच्चों को सांस्कृतिक परंपराओं को संजोते हुए अपनी प्रतिभा को निरंतर निखारने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय प्रबंधन ने इस आयोजन की सफलता का श्रेय सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों को दिया।

महिलाओं ने उठाया मुफ्त बस यात्रा का लाभ

सिरसा। जिलाभर में भाई-बहन के प्यार का प्रतीक रक्षाबंधन का त्यौहार श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। पर्व को लेकर बाजारों में काफी चहल-पहल रही। बहनों ने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधी और उनके उज्जवल और सुरक्षित जीवन की कामना की। शनिवार सुबह सवेरे ही बहनें सजधज कर तैयार हुई और और शुभ मुहूर्त में भाइयों की तिलक लगाकर व आरती उतारकर कलाई पर राखी बांधी। भाइयों ने बहनों को रक्षा का वचन देते हुए उन्हें उपहार भेंट किए। महिलाएं राखी बांधने दूर-दराज से अपने भाइयों के पास पहुंची। रक्षाबंधन पर सरकार द्वारा रोडवेज की बसों में दी गई निशुल्क यात्रा का महिलाओं ने भरपूर लाभ उठाया। बसों में महिलाओं की खासी भीड़ रही। सुरक्षा की दृष्टिगत पुलिस प्रशासन की ओर से भी पुख्ता शहर में पुख्ता इंतजाम किए गए थे। सुबह से ही शहर के प्रमुख बाजारों में गश्त करती रही। सरकार की ओर से रक्षाबंधन पर्व पर 36 घंटे के लिए महिलाओं को दी गई मुफ्त यात्रा करने की छूट के चलते शुक्रवार दोपहर के बाद से ही बस स्टैंड पर महिलाओं की भारी भीड़ दिखी। शनिवार को जिलाभर में चल रही रोडवेज की बसों के माध्यम से महिलाओं ने यात्रा की। बसों में आज पुरुषों के मुकाबले महिलाएं ही ज्यादा नजर आई।

जेल में बंदियों से बहनों ने की मुलाकात, बंधवाई राखी

सिरसा। जिला जेल में भी रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। विशेष रूप से रक्षाबंधन के मौके पर बंदियों व कैदियों की उनकी बहनों के साथ खुली मुलाकात का प्रबंध किया गया था। इतना ही नहीं जेल प्रशासन द्वारा सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से बहनों के लिए राखी के साथ-साथ जलपान की व्यवस्था भी गई थी। बहनों ने जेल प्रशासन की इस पहल की खूब प्रशंसा की। दूर-दराज से आई बहनों ने न केवल अपने भाइयों से मुलाकात की बल्कि पारिवारिक माहौल में राखी बांधी। जेल प्रशासन द्वारा रक्षाबंधन पर्व को देखते हुए खास व्यवस्था करवाई गई थीं। बहनें भाइयो की कलाई पर राखी बांधकर खुश नजर आई तो कई बहनें भावुक भी हो गई। जेल प्रशासन की ओर से टैंट की व्यवस्था करवाई गई। साथ-साथ आगंतुक बहनों के लिए सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से जलपान का प्रबंध किया गया था। इस मौके पर रोटरी क्लब के पदाधिकारी भूपेश मेहता ने कहा कि इस सराहनीय पहल ने यह सिद्ध किया कि त्योहारों की असली आत्मा तब जीवंत होती है, जब हम उन्हें वंचित, उपेक्षित और जरूरतमंद लोगों के साथ बांटते हैं। रोटरी क्लब का यह आयोजन न केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी का परिचायक है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि सेवा, करुणा और भाईचारा आज भी समाज को जोडऩे वाली सबसे मजबूत कडिय़ां हैं। कार्यक्रम में रोटरी क्लब के प्रधान डॉ. विद्यासागर बांसल, लखविंदर सिंह, कैशियर राजेश खट्टर, पूर्व प्रधान देवेंद्र मिगलानी, मनीष मेहता, विष्णु सिंगला व अन्य मौजूद रहे।

मॉडल टाउन में हुई चोरी का पुलिस ने किया पर्दाफाश, दो युवक गिरफ्तार, केस दर्ज

फतेहाबाद। मॉडल टाऊन क्षेत्र में एक स्कूल संचालक के मकान में हुई चोरी के मामले का सीआईए फतेहाबाद पुलिस ने पर्दाफाश किया है। इस मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान राजेश कुमार उर्फ कालिया पुत्र मोड सिंह निवासी रतिया चुंगी, फतेहाबाद तथा बलदेव उर्फ भोलू पुत्र कश्मीर सिंह, निवासी गुरुनानकपुरा मोहल्ला, फतेहाबाद के रूप में हुई है। सीआईए प्रभारी निरीक्षक कुलबीर सिंह ने बताया कि इस बारे पुलिस ने ऑलिव स्कूल फतेहाबाद के मालिक तुलसीराम मेहता की शिकायत पर 4 अगस्त को केस दर्ज किया था। शिकायतकर्ता के अनुसार, अज्ञात व्यक्तियों ने उनके घर से नकदी व कीमती सामान चोरी कर लिया था। पुलिस टीम ने तकनीकी साक्ष्य, सीसीटीवी फुटेज और गुप्त सूचना के आधार पर त्वरित कार्रवाई करते हुए दो संदिग्धों की पहचान की और उन्हें काबू करने में सफलता प्राप्त की। पूछताछ के दौरान खुलासा हुआ कि बलदेव उर्फ भोलू एक आदतन अपराधी है जिसके खिलाफ पहले से ही एनडीपीएस एक्ट व चोरी से संबंधित 9 आपराधिक मामले दर्ज हैं। प्रारंभिक पूछताछ में दोनों आरोपियों ने चोरी की वारदात को स्वीकार किया है। उन्हें सीआईए टीम द्वारा डिटेन कर नियमानुसार थाना शहर फतेहाबाद के अंतर्गत पुलिस चौकी बस अड्डा की जांच अधिकारी महिला सहायक उपनिरीक्षक मंजू रानी के हवाले किया गया।

धान फर्जीवाड़ा : लाखों रुपये का कैश बरामद

हरिभूमि न्यूज. फतेहाबाद

जिले में मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल पर फर्जी रजिस्ट्रेशन करवाकर धोखाधड़ी करने के मामले में आर्थिक अपराध शाखा, फतेहाबाद पुलिस ने लाखों की नकदी बरामद की है। पुलिस ने इस मामले में गिरफ्तार आरोपियों वलिहार सिंह पुत्र सुखदेव सिंह निवासी रतिया एवं केवल सिंह पुत्र सोहन सिंह निवासी नन्हेड़ी से पुलिस रिमांड के दौरान पूछताछ करते हुए यह नकदी बरामद की है।

ये था मामला

बता दें कि जिले में किसानों के नाम पर फर्जी रजिस्ट्रेशन कराकर मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल

■ पुलिस ने रिमांड में बरामद की राशि

के माध्यम से सरकारी योजनाओं का अनुचित लाभ उठाने की शिकायतें सामने आई थी। इन शिकायतों में फर्जी तरीके से धान की एंट्री कर बड़े स्तर पर सरकारी भुगतान प्राप्त करने की बात सामने आई थी। इस पर थाना शहर रतिया में 8 सितम्बर 2022 मामला दर्ज किया गया था। गहन जांच के उपरांत आर्थिक अपराध शाखा फतेहाबाद ने तीन आरोपियों वलिहार सिंह, भूपेन्द्र सिंह एवं केवल सिंह को 7 अगस्त को गिरफ्तार किया। आरोपी भूपेन्द्र सिंह को न्यायालय द्वारा न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया, जबकि वलिहार सिंह और केवल सिंह को 3 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया। पुलिस पूछताछ के दौरान दोनों आरोपियों ने फर्जीवाड़े की योजना, भूमिका और लाभार्थियों की जानकारी दी। उनकी निशानदेही पर पुलिस ने आरोपी वलिहार सिंह से 2 लाख रुपये व आरोपी केवल सिंह से 5 लाख रुपये बरामद किए हैं। बरामद राशि को पुलिस ने साक्ष्य के तौर पर कब्जे में लेकर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रकरण में शामिल अन्य व्यक्तियों की भूमिका की भी जांच की जा रही है। पुलिस द्वारा बैंक खातों, डिजिटल ट्रांजेक्शन्स, मोबाइल डिवाइसेज और दस्तावेजों की गहनता से जांच की जा रही है। जल्द ही अधिक गिरफ्तारी की संभावना है।

नशीली दवाओं के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए हेल्पलाइन नंबर 1933 पर करें शिकायत

फतेहाबाद। नशीली दवाओं के दुरुपयोग और तस्करी की रोकथाम के लिए केंद्र सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत गृह मंत्रालय ने नेशनल नारकोटिक्स हेल्पलाइन मानस 1933 की शुरुआत की है। यह हेल्पलाइन नंबर 24 घंटे सक्रिय हैं। उपायुक्त मनदीप कौर ने नागरिकों से आह्वान किया है कि यदि किसी भी नागरिक को कहीं भी नशे का अवैध व्यापार होता दिखाई दे, तो वे भारत सरकार के टोल-फ्री नंबर 1933, ऑनलाइन पोर्टल पर तुरंत सूचना दें। डीसी ने कहा कि नागरिक इस मंच के माध्यम से नशीली दवाओं की रिपोर्ट तुरंत सांझा कर सकते हैं। नागरिक नशामुक्त भारत के राष्ट्रीय दृष्टिकोण में योगदान देने के लिए नशीली दवाओं की तस्करी की हेल्पलाइन के माध्यम से रिपोर्ट दें। नागरिक हेल्पलाइन से नशीली दवाओं के बारे में परामर्श भी ले सकते हैं। उपायुक्त मनदीप कौर ने बताया कि इस हेल्पलाइन की सबसे खास बात यह है कि सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान पूरी तरह से गोपनीय रखी जाएगी। लोग बिना डर या नि-संकोच नशीली दवाओं की तस्करी / व्यापार की जानकारी सांझा कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह पहल न केवल समाज में फैले नशे की प्रवृत्ति को रोकेगी बल्कि युवाओं को भी इस बुराई से बचाने में मदद मिलेगी। केंद्र सरकार का लक्ष्य वर्ष 2047 तक भारत को पूरी तरह से नशा मुक्त बनाना है और इस दिशा में जन-सहयोग को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

चेयरमैन ने 25 लाख से निर्मित पंचायत समिति रेस्ट हाउस का किया उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज. रतिया

खंड विकास एवं पंचायत कार्यालय में करीबन 25 लाख रुपए की लागत से बने हुए पंचायत समिति रेस्ट हाउस का चेयरमैन केवल मेहता ने उद्घाटन किया। पत्रकारों से बातचीत करते हुए अध्यक्ष केवल मेहता ने बताया कि पंचायत समिति के सदस्यों व सरपंच द्वारा पिछले काफी समय से खंड कार्यालय में एक रेस्ट हाउस की मांग की जा रही थी जिसको देखते हुए प्रस्ताव पास किया गया था और 25 लाख रुपए की लागत से रेस्ट हाउस का निर्माण किया गया है। इसमें दो कमरों के अलावा एक मीटिंग हॉल किचन बाथरूम व बालकोनी इत्यादि बनाए गए हैं। इस रेस्ट हाउस के बनने से विभिन्न गांव के आने वाले सरपंचों व पंचायत समिति सदस्यों को लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि पंचायत समिति रतिया द्वारा बिना किसी भेदभाव के गांवो में करोड़ों रुपए के विकास कार्य करवाए जा रहे हैं और जल्द ही सभी गांवो में विकास कार्यों के लिए अनुदान भी दिया जाएगा। इस अवसर पर पंचायती राज विभाग के उपमंडल अधिकारी कुलदीप सिंह, कनिष्ठ अभियंता मनोज कुमार, सुशील कुमार, प्रदीप कुमार, कपिल कुमार, संदीप सोहल व विभिन्न गांव के सरपंच सुखजिंदर सिंह व अन्य मौजूद रहे।

रतिया। पंचायत समिति रेस्ट हाउस का उद्घाटन करते हुए चेयरमैन केवल मेहता।

रिटायर्ड कर्मचारी संघ ने बैठक कर जताया रोष

कर्मचारियों की मांगों को अनदेखा कर रही सरकार

हरिभूमि न्यूज. डबवाली

रिटायर्ड कर्मचारी संघ की बैठक शनिवार को राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल में हुई। बैठक में बड़ी संख्या में रिटायर्ड कर्मचारी उपस्थित हुए एवं लंबित मांगों व समस्याओं को लेकर विचार विमर्श किया। बैठक को संबोधित करते हुए प्रधान सुखवंत सिंह चीमा ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा संसद में पास किया गया नया वित्त विधेयक-2025 सेवानिवृत कर्मचारियों को वेतन संशोधन के लाभ से वंचित करता है। यह सेवानिवृत कर्मचारियों के साथ अन्याय है। उन्होंने मांग की कि सरकार केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ की तरह 65, 70, 75 वर्ष की आयु पार करने पर क्रमशः पेंशन में 10, 15, 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी लागू करे ताकि रिटायर्ड कर्मचारी अच्छा जीवन गुजार सकें। पेंशन की आय को टैक्स मुक्त किया जाए। आज के जमाने में जैसे मेडिकल सुविधा बहुत महंगी हो गई है इसलिए मेडिकल भत्ता 3000 रुपए किया जाए। सभी बीमारियों के लिए कैशलेस मेडिकल सुविधा प्रदान की जाए। गुरतेज सिंह पीजीटी ने कहा कि रिटायर्ड कर्मचारियों को रेलगाड़ियों में किराए में 50 प्रतिशत छूट मिलती थी जोकि बंद कर दी गई है, उसे दोबारा बहाल किया जाए। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा कर्मचारियों की मांगों को लंबे समय से अनदेखा किया जा रहा है जिसे सरकार को जल्द पूरा करना चाहिए। सतीश कुमार व निर्मल सिंह सुंधा ने कहा कम्प्युटेशन की कटौती 15 वर्ष से घटाकर 12 वर्ष की जाए।

सिरसा। बैठक में भाग लेते रिटायर्ड कर्मचारी।

haribhoomi.com

हरिभूमि रविवार भारती

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्वाधीनता दिवस विशेष

रोहतक, रविवार
10 अगस्त 2025

P-1

आवरण कथा
ओम निश्चल

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

79वां स्वतंत्रता दिवस

आजादी की फलश्रुति

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है- *यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है- *तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।*

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विक्षुब्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

क्यों बंटते गए दायरों में हमः यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्यः इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिकाः हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर

हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

दो शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

फर्श से पहुंचे अर्श परः हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

करना पड़ा कठिन संघर्षः जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

निरंतर बढ़ते रहे आगेः साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रमः 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

दूर करनी होंगी कमजोरियांः हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

तब नई पीढ़ी भी समझेगी

स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनता की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनियाः हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैलीः हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

पिछली पीढ़ी निभाए दायित्वः मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

उनके सवालों का दें तार्किक जवाबः नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

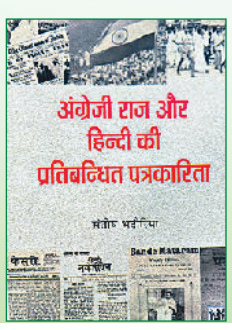

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताबः अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखकः** संतोष भदौरिया, **मूल्यः** 350 रुपए, **प्रकाशकः** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

विशेष: जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। ❋

इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। ❋

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाईयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। ❋

उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। ❋

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काडमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। ❋

काडमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

नया दौर / लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं: आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

संस्कृति की सॉफ्टपावर: एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्टयूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

कृष्ण की यूनिवर्सल अपील: श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। ❋

कहानी / आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड

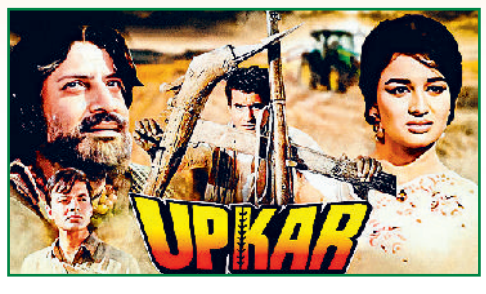

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। ❋

बॉलीवुड ट्रेंड / अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। ❋